रजिस्ट्री सं० डी० 221 REGISTERED No. D. 22

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 291] नई दिल्ली, मंगलवार, दिसम्बर 26, 1972/पौष 5, 1894

No. 291] NEW DELHI, TUESDAY, DECEMBER 26 1972/PAUSA 5, 1894

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके ।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 26th December 1972

No. 3/16/72-Pub. II.—The death of Shri Chakravarti Rajagopalachari at 5. P.M. on the 25th December, 1972 has removed from our midst a statesman, profound thinker and a great patriot. As a close associate of Mahatma Gandhi as an indefatigable freedom fighter, as Chief Minister of Madras, as Governor of West Bengal, as Home Minister of India and as the first Indian to hold the office of Governor-General of India, Shri Rajagopalachari left an indelible impress of quality and distinction on our contemporary life.

Shri Rajagopalachari, popularly known as 'Rajaji" or "C.R.", was born in 1878 in the Salem district of Madras. He was educated at the Central College, Bangalore and the Presidency College and Law College, Madras. He joined the Bar in 1900 and practised at Salem till 1919. His association with the freedom movement began in 1906. Fired with the urge to serve the country more devotedly, he gave up the law practice and joined Mahatma Gandhi's Satyagraha campaign in 1919 and the Freedom Movement in 1920.

Shri Rajagopalachari was the General Secretary of the Indian National Congress from 1921 to 1922 and a member of its Working Committee from 1922 to 1942 and again in 1946-47 and 1951-54. Between 1921—42, he was imprisoned five times for participation in the freedom movement. In April, 1942, he resigned from the Congress on account of difference of opinion. He was Secretary of the Prohibition League of India in 1930 and Premier of Madras during 1937—39. He was also Vice-President of Dakshin Bharat Hindi Prachar Sabha for some time. He assisted Mahatma Gandhi in his talks with Mr. Jinnah in 1944 and was a Member of the Interim Government, 1946-47 and Governor of West Bengal, August, 1947—June, 1948.

An elder statesman and a great patriot, Rajaji acted as Governor-General of India in November, 1947 and had the unique distinction of being the first Indian Governor-General from June, 1948 to January, 1950. His elevation to the highest office of the country was a recognition by a grateful Nation of his distinguished services to the country and a tribute to his outstanding capabilities. He was Minister without portfolio in the Union Cabinet, July—December, 1950, Minister of Home Affairs, 1950-51 and Chief Minister of Madras, 1952—54. In 1954, he was awarded the highest honour of the land the BHARAT RATNA for his great services to the nation.

A strong believer in pacifism and an uncompromising critic of the nuclear weapons, Rajaji carried on an incessant campaign against the use of atom bombs and was the spokesman of the Three-man Indian delegation from the Gandhi Peace Foundation to canvass support for the prohibition of nuclear tests. His voice against the nuclear weapons was only an outward manifestation of a mind and a heart imbued with spiritual and moral values and boundless love for humanity. Basic values of religion formed the sheet anchor of his life. He wrote a number of books, all of which have profound moral significance to the conflicttorn world. He was convinced that civilization based on materialism was self-destructive. The cultivation of moral values alone could provide a durable foundation to civilization.

While Rajaji's books Marcus Aurelius and Socrates, the Vedanta, the Bhagvad Gita and the Upnishads, Voice of the Uninvolved, Kambaramayanam-Ayodhya Kandam are profound, his Mahabharata and Ramayana are full of beauty and exquisiteness. His book Hinduism—Doctrine and Way of Life, is an elaboration of his Vedanta and is of special interest to scholars and statesmen of all countries. The crises of the contemporary world can be overcome only by a more constructive examination and appreciation of the moral and philosophical background of the faiths and practices that have hitherto kept civilization moving towards progress instead of self-destruction. The central theme of this book should encourage all those who are fighting the battle for a civilization governed by Moral Order. He edited Gandhiji's Young India during the latter's imprisonment and was the principal contributor to the Swarajya Weekly. As an accomplished dialectician, he always had a formula to offer for the most difficult and intricate problems. Paying tribute to C.R. in his Autobiography Pandit Jawaharlal Nehru wrote: "His brilliant intelect, selfless character and penetrating powers of analysis have been tremendous asset to our cause".

GOVIND NARAIN, Secy.

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 26 दिसम्बर, 1972

संख्या 3/16/72-पब II.—श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के 25 दिसम्बर, 1972 को सांय 5.44 पर देहावसान के साथ हमारे बीच से एक राजनेता, एक गहन विचारक, और एक महान देशभक्त उठ गया है। महात्मा गांधी के निकटतम सहयोगी, स्वातन्त्र्य युद्ध के अग्रक सेनानी, मद्रास के मुख्य मंत्री, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल, भारत के गृह मंत्री और भारत के गवर्नर जनरल का पद संभालने वाले प्रथम भारतीय के रूप में श्री राजगोपालाचारी ने हमारे समसामयिक जीवन पर गुण और विशिष्टता की अमिट छाप छोड़ी है।

"राजाजी" या "सी० आर०" के नाम से प्रख्यात श्री राजगोपालाचारी का जन्म मद्रास के सेलम जिले में 1878 में हुआ था और उन्होंने बंगलौर के सेन्ट्रल कालिज और मद्रास के प्रेजीडेंसी कालेज तथा ला कालेज में शिक्षा पायी। उन्होने 1900 से 1919 तक सेलम में वकालत की। स्वतन्त्रता आन्दोलन से उनका सम्बन्ध 1906 में आरम्भ हुआ। देश सेवा का कार्य और अधिक एकाग्रता के साथ करने की भावना से प्रेरित हो कर उन्होंने वकालत छोड़ दी और 1919 में महात्मा गांधी के सत्याग्रह अभियान मे और 1920 मे स्वतन्त्रता आन्दोलन मे शामिल हो गये।

श्री राजगोपालाचारी 1921 से 1922 तक इंडियन नेशनल कांग्रेस के महासचिव रहे और 1922 से 1942 तक और फिर 1946 से 1947 और 1951 से 1954 तक कांग्रेस की कार्यसमिति के सदस्य रहे। 1921 से 1942 के बीच स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के सिलसिले में उन्हें पांचबार जेल जाना पड़ा। 1942 मे मतभेद के कारण उन्होंने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया। वे 1930 में भारतीय नशाबन्दी लीग (प्रोहिबिशन लीग आफ इंडिया) के सचिव रहे और 1937—39 में मद्रास के मुख्य मत्री रहे। वे कुछ समय तक दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के उपाध्यक्ष भी रहे। उन्होंने 1944 में श्री जिन्ना के साथ वार्ता में महात्मा गांधी की सहायता की। वे 1946—47 में अन्तरिम सरकार के सदस्य तथा अगस्त, 1947 से जून 1948 तक पश्चिम बंगाल के राज्यपाल रहे।

वरिष्ठ राजनेता और महान् देशभक्त राजा जी ने नवम्बर, 1947 मे भारत के गवर्नर जनरल के पद पर स्थानापन्न रूप से कार्य किया तथा जून, 1948 से जनवरी, 1950 तक प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल रहने का अपूर्व गौरव प्राप्त किया। देश के सर्वोच्च पद पर उनकी समुन्नति, एक कृतज्ञ राष्ट्र द्वारा उनकी विशिष्ट देश सेवाओं की मान्यता और उनकी महान् क्षमताओं का अभिनन्दन ही थी। जुलाई—दिसम्बर, 1950 मे वे केन्द्रीय मत्रिमडल में बिना विभाग के मत्री, 1950—51 में गृह मत्री, और 1952—54 में मद्रास के मुख्य मत्री रहे। उन्हे 1954 मे उनकी महान राष्ट्र सेवाओं के लिये देश का सर्वोच्च सम्मान "भारत रत्न" प्रदान किया गया।

शान्तिवादिता मे प्रबल निष्ठाशील और परमाणु अस्त्रो के विस्फोट के अथक आलोचक राजाजी ने परमाणु बमो के विरुद्ध निरन्तर अभियान जारी रखा। वे परमाणु परीक्षणो पर प्रतिबन्ध के लिये जनमत तैयार करने के विषयकगांधी शान्ति प्रतिष्ठान के त्रिसदस्यीय भारतीय प्रतिनिधि मडल के प्रवक्ता थे। परमाणु-अस्त्रो के विरुद्ध उन की आवाज, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यो से अनुप्राणित और मानवता के प्रति असीम प्रेम से भरे उनके मस्तिष्क और हृदय की वाहक अभिव्यक्ति ही थी। धर्म के आधारभूत मूल्य उनके जीवन का मूलाधार थे। उन्होंने अनेकानेक पुस्तकें लिखी जिन सभी में संघर्ष निरत संसार के लिये एक गम्भीर नैतिक विशिष्टता निहित है। उनका यह दृढ़ मत था कि भौतिकवाद पर आधृत सभ्यता स्वय-क्षयशील है। उनकी मान्यता थी कि केवल नैतिक मूल्यो का सवर्धन ही सभ्यता को एक चिरस्थायी आधार प्रदान कर सकता

राजाजी की मार्कस आरेलियस और सुकरात, वेदान्त, भगवद्गीता तथा उपनिषद् वायस आव अनइन्वोक्ड, कम्बरामायणम्-अयोध्याकाण्डम् नामक पुस्तके विद्वत्तापूर्ण है और उनकी महाभारत तथा रामायण सौदर्य और सवेदना से परिपूर्ण है। "हिन्दूइज्म—डाक्ट्रिन एण्ड वे आफ लाइफ नामक पुस्तक उनके वेदान्त का ही प्रस्तार है और सभी देशो के विद्वानों और राजनेताओं को विशे

रूप से आकृष्ट करती है। आज के संसार की समस्याओं पर तभी विजय पायी जा सकती है जब कि उन निष्ठाओं और परम्पराओं की नैतिक और दार्शनिक पृष्ठभूमि की अधिक रचनात्मक परीक्षा और सराहना की जाय, जिन्होंने आज तक सभ्यता को आत्मघात के बजाय प्रगति की ओर अग्रसर रखा है। इस पुस्तक का मुख्य प्रतिपाद्य उन लोगों का उत्साह बढ़ायेगा जो नैतिक नियमों से शासित सभ्यता के लिये संघर्ष कर रहे हैं। उन्होंने गांधी जी की जेल यात्रा के दौरान उनके 'यंग इंडिया' का सम्पादन किया और वे "स्वराज्य साप्ताहिक" के अन्यतम लेखकों में से थे। वे कुशल विश्लेषक थे और इसलिये कठिनतम और जटिलतम समस्याओं के हल के वास्ते उनके पास सदा ही कोई न कोई सूत्र मौजूद रहता था। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा में सी० आर० को भावांजलि भेंट करते हुये लिखा था : "उनकी प्रचण्ड प्रतिभा, नि स्वार्थ चरित्र, और विश्लेषण की पारगामी शक्तियां हमारे पक्ष की महान् निधियां रही हैं।"

गोविन्द नारायण, सचिव।

PRINTED BY THE GENERAL MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, MINTO ROAD, NEW DELHI AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1972